

सोशल मीडिया और टेक कंपनियों को यह जिम्मेदारी सुनिश्चित करनी होगी कि उपलब्ध सामग्री उपयोगकर्ता की उम्र-सीमा के हिसाब से हो। यह बच्चों के माता-पिता की जिम्मेदारी नहीं होगी। ऐसे में अगर 16 साल से कम उम्र के बच्चे सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं, तो जुर्माना माता-पिता या बच्चों पर न होकर, यह सोशल मीडिया और टेक कंपनियों पर होना चाहिए। यह एक अनुकरणीय कदम है और विश्व स्तर पर इस फैसले का व्यापक स्वागत हो रहा है।

भारत जैसे देश में, जहाँ सोशल मीडिया का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है, यह आवश्यक है कि सरकार बच्चों की सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाए। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और टेक कंपनियों को जिम्मेदार ठहराना एक महत्वपूर्ण पहल हो सकती है। इसके तहत, उनकी जिम्मेदारी होगी कि वे उपयोगकर्ता की आयु का सत्यापन करें और अपने प्लेटफॉर्म पर बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करें।

अतः मेरा सरकार से आग्रह है कि इस दिशा में पहल करते हुए 16 साल से कम उम्र के बच्चों द्वारा सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर प्रतिबंध का कानून बनाने पर विचार करें।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI GHANSHYAM TIWARI): The following hon. Members associated themselves with the Special Mention made by hon. Member, Shri Neeraj Dangi: Shri A. A. Rahim (Kerala), Shri M. Mohamed Abdulla (Tamil Nadu), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Shri Anil Kumar Yadav Mandadi (Telangana), Shri Ashok Singh (Madhya Pradesh), Shri Haris Beeran (Kerala), Shrimati Jebi Mather Hisham (Kerala), Dr. John Brittas (Kerala) and Shri R. Girirajan (Tamil Nadu).

Concerns over road accidents in India

SHRI BRIJ LAL (UTTAR PRADESH): Sir, in 2022, road accidents killed nearly 1,70,000 people in India while 4,23,158 people were injured. The number of fatalities, the highest in the world, rose ten per cent over 2021. The country recorded 4,46,788 road crashes during the year -- eleven per cent more than 4,03,116 in 2021. In terms of fatalities, China is next on the list but with less than half the deaths at 61,000. India accounts for nearly 14 per cent of global deaths due to road accidents and an estimated 3 per cent of GDP is lost every year.

Over-speeding and careless driving, accounts for over 87 per cent of the road crashes and fatalities, according to data from the NCRB. Driving under the influence of alcohol or drugs was the reason for 17 per cent crashes. 19.5 per cent deaths were caused when a vehicle was hit from the back followed by hit-and-run at 18.1 per cent and head-on collision at 15 per cent. National highways, making up 2 per cent of India's road length, accounted for 30.5 per cent of the accidents and 35 per cent of

the deaths. Most accidents and fatalities were caused by two wheelers, accounting for over 45,000 deaths.

Ironically, two-wheeler riders are most vulnerable, accounting for 44.5 per cent of the fatalities, followed by pedestrians at 19.55 per cent. According to data from MoRTH, the share of pedestrians has, however, more than doubled from 9 per cent in the last 6 years. The number of pedestrian deaths in India, in 2022, was more than the combined fatalities in EU and Japan.

I request the Government to immediately address this situation and take suitable remedial measures. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI GHANSHYAM TIWARI): The following hon. Members associated themselves with the Special Mention made by the hon. Member, Shri Brij Lal: Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Dr. Sasmit Patra (Odisha) and Shri R. Girirajan (Tamil Nadu).

Now, Shri Raghav Chadha.

Demand for awarding Bharat Ratna to Shaheed-e-Azam Sardar Bhagat Singh ji

श्री राघव चड्ढा (पंजाब): महोदय, आपने मुझे स्पेशल मेंशन बोलने की अनुमति दी, इसके लिए आपको शुक्रिया। जो विषय मैं उठाने जा रहा हूँ, वह सिर्फ मेरे ही नहीं, बल्कि हर देशभक्त के दिल के करीब है।

*'लिख रहा हूँ मैं जिसका अंजाम, कल आगाज़ आयेगा
मेरे लहू का हर एक कतरा इंकलाब लायेगा
मैं रहूँ ना रहूँ, ये वादा है तुझसे मेरा
मेरे बाद वतन पे मिटने वालों का सैलाब आयेगा।'*

सर, क्रांतिकारी भगत सिंह का देश की आजादी में योगदान बहुत बड़ा है। उनके साहस की सरसराहट से अंग्रेजी जेल की दीवारें कांपती थीं। उनके हौसलों के आगे घमंड के ऊँचे-ऊँचे पहाड़ भी झुकते थे। वे भारत माता के लाल थे, ब्रिटिश हुकूमत की नजर में साक्षात काल थे। मगर उनकी शहादत के 93 साल बाद भी उन्हें 'भारत रत्न' नहीं मिला। आज मैं सरकार से माँग करता हूँ कि देश की आन-बान और शान भगत सिंह को 'भारत रत्न' दिया जाए। ऐसा होता है तो सचमुच भगत सिंह का नहीं, बल्कि 'भारत रत्न' का गौरव बढ़ेगा। वे भगत सिंह ही थे, जिनकी इंकलाबी बोलियों से अंग्रेजी हुकूमत की गोलियाँ थर-थर कांपती थीं। वे भगत सिंह ही थे, जिनके सीने में धधकती आग से लंदन का क्राउन भी धधक उठा। भगत सिंह ने इस देश को अपनी जवानी दी, अपनी ज़िंदगी दी।